International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 01-03

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 01-03
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-09-2019
Accepted: 03-10-2019

कर्ण शर्मा
शोधच्छात्र पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़, भारत

corresponding author
कर्ण शर्मा
शोधच्छात्र पंजाब विश्वविद्यालय
चण्डीगढ़, भारत

प्रसन्नराघव नाटक के कथानक में कविकृत परिवर्तनः एक अध्ययन

कर्ण शर्मा

प्रस्तावना

जयदेवकृत प्रसन्नराघव नाटक के कथानक का आधार वाल्मीकिकृत रामायण है। इन्होंने सम्पूर्ण सारगर्भित रामायण के कथानक को अपना विषय बनाया है। इन्होंने प्रकृत कथानक में नाटक के अनुरुप रोचकता लाने के लिए कुछ स्वबुद्धि के अनुसार परिवर्तन भी किये हैं। इन परिवर्तनों के कारण ही प्रकृत नाटक में नाटकीय तत्त्वों का साफलय प्राप्त होता हुआ परिलक्षित होता है। कथानक में कवि द्वारा किये गये प्रमुख परिवर्तन निम्नप्रकार से हैं–

1. प्रकृत नाटक में जनक ने सीता के विवाह के लिए स्वयंवर का आयोजन किया है, तथा उस स्वयंवर में अनेक राजा–महाराजा उपस्थित हुए हैं। दो भ्रमर इन उपस्थित हुए राजाओं का वर्णन करते हैं और जनक द्वारा की गई प्रतीज्ञा की भी घोषणा करते हैं। [1] परन्तु रामायण में सीता के विवाह को स्वयंवर का रुप नहीं दिया गया है। 'अतः मैं वर के पराक्रम की परीक्षा किए बिना अपनी कन्या किसी को भी नहीं दूँगा। तब तो हे मुनि श्रेष्ठ। सब राजा लोग इकट्ठे हो। अपने परक्रम की परीक्षा देने को मिथिलापुरी में आए। उनके बल परीक्षा के लिए मैंने यह धनुष उनके सामने रखा। उनमें से कोई भी राजा उस धनु को उठाकर उस पर रोदा न चढ़ा सका, तब उन राजाओं को अल्पवीर्य समझा'। [2]
2. प्रकृत नाटक के प्रथमांक में सीता से विवाह के लिए रावण तथा बाणासुर भी स्वयंवर में उपस्थित होते हैं। परन्तु महादेव के धनु को उठाने के प्रयत्न में वे दोनों असफल हो जाते हैं। ऐसा वर्णन कवि ने नाटक में किया है। [3] इसके विपरीत रामायण में सीता विवाह में किसी भी दैत्य या राक्षस का उल्लेख नहीं है 'तब, हे मुनि श्रेष्ठ! मेरी कन्या के साथ अपना विवाह करने के लिए अनेक देशों के राजा आए'। [4]
3. प्रसन्नराघव में सीता स्वयंवर में उपस्थित राजाओं के महादेव धनुष को प्रत्यंचित करने में असफल हो जाने पर वे सभी राजा जनक के आग्रह पर उनका अतिथ्य स्वीकार करने के लिए कुछ दिन मिथिलापुरी में ही निवास करते हैं। [5] रामायण के अनुसार प्रकृत वृत्तान्त विपरीत है। यथा 'तब उन लोगों ने कुद्ध हो मिथिलापुरी घेर ली। क्योंकि धनुष द्वारा बल की परीक्षा देने में उन्होंने अपना अपना अपमान समझा। उन लोगों ने अत्यन्त कुद्ध हो मिथिला वासियों को बड़े–बड़े कष्ट दिए। एक वर्ष लड़ाई से मेरा बहुत सा धन भी नष्ट हुआ। इसका मुझे बड़ा दुःख हुआ। तब मैंने तप द्वारा देवताओं को प्रसन्न किया'। [6]
4. प्रसन्नराघव में जो राम–सीता का वाटिका प्रसंग रुपी पूर्वानुराग नाटककार ने प्रस्तुत किया है। [7] यह वृत्तान्त वाल्मीकि रामायण में नहीं है। यह प्रसंग जयदेव कि स्वकल्पना है। जोकि नाटक को श्रृंगारिक बनाने के लिए नाटककार ने प्रस्तुत की है।
5. नाटक के तृतीयांक में 'विश्वामित्र महादेव धनुष को देखने के कौतूहल से जनक को राम द्वारा धनुष मंगवाने के लिए कहते हैं। जनक आश्चर्यपूर्वक आप क्यों यज्ञ की तरह दुधमुँहे राम को भी शिव धनुष लाने की आज्ञा दे रहे हैं। विश्वामित्र राम के प्रताप का वर्णन करते हैं जिससे जनक राम को धनुष लाने की आज्ञा दे देते हैं। परन्तु राम के हाथ में आते ही धनुष अनायास ही टूट जाता है जिस कारण वह उसे ला नहीं पाते हैं'। [8] किन्तु रामायण के अनुसार महर्षि विश्वामित्र ने राजा जनक से कहा 'हे राजन्! वह धनुष श्रीरामचन्द्र को दिखलाईए तो? तब जनक ने अपने मन्त्रियों को आज्ञा दी कि, जो दिव्य धनुष चन्दन और पुष्पमालाओं से भूषित है उस ले आओ। उस धनुष को लाने के लिए पाँच हजार मजबूत मनुष्य, धनुष की आठ पहिए की पेटी को, कठिनता से खींच और ढकेल कर वहाँ ला सके'। [9]
6. प्रसन्नराघव नाटक के कथानक में 'धनुभंग के पश्चात न तो दशरथ को बुलवाया न ही उनसे विवाह की अनुमति ली गई।

विश्वामित्र ने स्वयं ही विवाह करवा दिया यथा– जनक इस कारण अब समय बिताने की आवश्यकता नहीं है। सीता और राम के पाणिग्रहण के लिए विश्वामित्र मुनि की अनुमति मांगिए'। [10] इस के विपरीत रामायण में राजा जनक विश्वामित्र से 'ब्रह्मन्! हे कौशिक! यदि आपकी सम्मति हो तो, मेरे मन्त्री रथ पर सवार हो, शीघ्र अयोध्या को जायें। और महाराजा दशरथ को नम्रतापूर्वक यहाँ का सारा हाल सुनाकर, यहाँ लिवा लावें' [11]। 'महाराजा दशरथ, वसिष्ठ, वामदेव आदि ऋषियों और अपनी चतुरगिणी सेना सहित मिथिला में विवाहोत्सव में पंहुचे' [12]।

7. प्रकृत नाटक में परशुराम वृत्तान्त में 'परशुराम पहले तो शिवधनुष के आरोपन की शर्त हटा लेने के लिए जनक के पास संदेश भेजते हैं, परन्तु जब जनक उसकी अवहेलना कर देते हैं, तो धनुर्भंग के पश्चात् वे क्रोद्धित होकर मिथिला में आ जाते हैं। जहाँ पर उनका राम के साथ वाक्क युद्ध होता है। बीच–बीच में लक्ष्मण भी व्यंग्योक्तियाँ करते हैं। अन्त में राम परशुराम के साथ युद्ध भूमि में चले जाते हैं। जहाँ पर राम द्वारा वैष्णव धनुष का आरोपण होने के कारण परशुराम का तेजोभंग होता है' [13]। रामायण में प्रकृत वृत्तान्त विपरीत रुप में प्रस्तुत किया गया है। वहाँ पर दशरथ, राम और लक्ष्मण आदि सीता को लेकर मिथिला से लौटते समय मार्ग में परशुराम मिलते हैं। वहीं पर वाह राम को विष्णु का धनुष बाणारोपण के लिए देते हैं, और कहते हैं कि तुम इसमें सफल हो गये तो में तुम से द्वन्द्व युद्ध करुंगा। बीच में केवल दशरथ ही बोलते हैं लक्ष्मण चुप रहते हैं' [14]।
8. नाटककार ने 'माण्डवी और श्रुतकीर्ति को जनक की कन्याएँ कहा है' [15]। जबकी रामायण में विश्वामित्र जनक से कहते हैं कि 'हे राजन्! यह होने पर भी मुझे इस पर कुछ वक्तव्य है, उसे सुनिए। आपके यह छोटे धर्मज्ञ भाई जो कुशध्वज हैं, उन धर्मात्मा की दो कन्याओं को, जो इस संसार में अपने सौन्दर्य में सर्वश्रेष्ठ हैं, बहु बनाने के लिए मैं मांगता हुँ। अर्थात् हे राजन्! एक कन्या बुद्धिमान् राजकुमार भरत के लिए और एक शत्रुघ्न के लिए हम माँगते हैं' [16]।
9. पांचवें अंक में जयदेव ने यमुना, गोदावरी, गंगा, सरयू, तुंगभद्रा आदि नदियों तथा सागर का मानवीकरण करके उनके द्वारा अपने–अपने तट पर घटित राम कथा को सुनवाया है, वह भी नाटककार की स्व कल्पना है। क्योंकि रामायण में इस प्रकार के कथा प्रसंग का कोई वर्णन नहीं है।
10. नाटक में सीताहरण का प्रसंग पंचमांक में है। इस प्रसंग का वर्णन नाटककार ने बहुत ही सुन्दर रुप से प्रस्तुत किया है। रावण पहले तो अनसूया प्रदत अंगाराग द्रव्य से उत्पन्न अग्नि से आवृत सीता का स्पर्श नहीं कर पाता है, परन्तु बाद में वह वरुण मन्त्र के ध्यान से बुलाये गये मेघों से आच्छादित हाथों से उसे ले जाता है' [17]।
11. नाटक के षष्ठांक में 'सीता प्राण त्याग के लिए त्रिजटा से अग्नि लाने की तथा अग्नि जलाने की याचना करती है' [18]। परन्तु इसके विपरीत रामायण में 'मैं अपना जीवन, विष खाकर अथवा गले में पैनी कटारी मारकर शीघ्र समाप्त करती। किन्तु क्या करुं ना तो मुझे कोई विष ही लाकर देने वाला यहाँ दिखाई पडता है और न मुझे इस राक्षस के घर में अपना गला काटने को शस्त्र ही मिलता है, तदनन्तर बहुत कुछ सोच विचार कर, अपनी चोटी के बन्धन को हाथ में ले, कहने लगी कि, मैं इसी बन्धन से गले में फाँसी लगाकर, अपनी जान दे दूँगी। परन्तु फिर वह धैर्य धारण करती है' [19]।
12. नाटक में हनुमान द्वारा राम की रत्नमुद्रिका को देने का वृत्तान्त नाटकीय ढ़ग से आया है। राम के विरह से सन्तप्त सीता प्राण त्यागने की इच्छा करती हुई अशोक वृक्ष से अग्नि कण की याचना करती है, तभी ऊपर से हनुमान अंगुठी गिरा देते हैं। पहले तो सीता उसे अग्नि का कण समझती है, परन्तु जब वह निकट जाकर उसे देखती है तो चकित रह जाती है' [20]। रामायण में यह प्रसंग इस प्रकार से है– 'सीता को विश्वास कराने के लिए महातेजस्वी पवननन्दन नम्र हो सीता जी से फिर बोले, हे महाभगे! मैं वानर हूँ और बुद्धिमान श्रीरामचनद्र जी का दूत हूँ। हे देवी! देखो, श्री रामनामांकित यह अंगुठी है। आपको विश्वास दिलाने के लिए श्रीरामचन्द्र जी ने यह मुझे दी थी। सो मैं लाया हूँ, अब तुम अपने चित को सावधान करो और समझ लो कि, तुम्हारे सब दुःख दूर हो गए' [21] ।
13. षष्ठांक में एक प्रसंग आता है कि 'रावण कहता है कि – अरे यहाँ कोई है, शीघ्र ही मेरे हाथ में कपाल पात्र दो जिससे इस सीता का कण्ठ रुधिर उसमें भंरु। तभी हनुमान अशोक वृक्ष से अक्ष कुमार का कटा हुआ सिर रावण के हाथ में गिरा देते हैं' [22]। इस के विपरीत रामायण में 'हनुमान द्वारा अक्ष कुमार को मारे जाने का ही वर्णन मिलता है अन्य नहीं' [23]।
14. नाटक में त्रिजटा सीता को राम के पास कोई चिह्न या सन्देश भेजने के लिए प्रेरित करती है। [24] परन्तु रामायण में इसके विपरीत कथा है। यथा–हनुमान कहता है कि 'हे सुन्दरी! यदि मेरे साथ चलने की तुम्हारी इच्छा नहीं है, तो मुझे कोई अपनी चिह्नानी ही दो जिससे श्रीरामचन्द्र जी को प्रतीति हो'। [25]
15. प्रसन्नराघव के ष्षष्ठांक में सीता के आग्रह करने पर त्रिजटा आकाश चारिणी होकर मेघनाद द्वारा हनुमान् को बाँधे जाने व हनुमान् द्वारा लंका को जलाने तथा समुद्र लंघन का वर्णन करती है। [26] परन्तु रामायण में प्रकृत प्रसंग विपरीत रुप से प्रस्तुत है। वहाँ पर त्रिजटा द्वारा इस प्रकार का कोई वर्णन प्रस्तुत नहीं किया गया है। अपितु यह प्रसंग स्वतन्त्र रुप से ही प्रस्तुत किया गया है। [27]
16. षष्ठांक में 'विधाधर रत्नश्शेखर ने अपने मित्र चम्पकापीड को इन्द्रजाल से लंका की सभी घटनाएँ दिखलाई हैं, जिन्हें सीता के विरह में व्याकुल राम ने भी देखा है'। [28] परन्तु रामायण में ऐसा कोई भी प्रसंग वर्णित नहीं है। वहाँ हनुमान ने स्वयं आकर राम, लक्ष्मण, सुग्रीव आदि के समक्ष लंका में स्थित सीता का सब वृत्तान्त कहा है। [29]
17. सप्तमांक में विभीषण रावण को एक पत्र भेजकर परस्त्री दर्शन न करने की शिक्षा देता है, परन्तु रावण हसकर परस्त्री दर्शन का औचित्य सिद्ध करने का प्रयत्न करता है।

निष्कर्ष

नाटक के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह अनर्घराघव से पूर्णता प्रभावित है। इन्होंने जो भी परिवर्तन कथानक में किये हैं वे सभी नाट्य नियमों के अनुरुप हैं। इन परिवर्तनों को नाट्यविधा से उजागर करके नाटककार जयदेव ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का परिचय दिया है।

सन्धर्व सूची

1. नानादिगन्तसमागतनृपतिचक्रवर्णनाय जनकेन समादिष्टौ। पृ. 39।, अद्य हि जनकराजकन्यकावीरस्वयंवरविलोकन..... पृ. 37–38।
2. वा. रा. अ.66.17–19।
3. प्र. रा. पृ 65–79।
4. वा. रा. 66.16।
5. प्र. रा. 3.40।
6. वा. रा बा. का. 66.21–23।
7. प्र. रा. पृ. 94–97।
8. वही पृ. 169–175।
9. वा. रा. बा.का. 67.1–5।
10. प्र. रा. पृ. 190।
11. वा. रा. बा.का. 67.23–25।
12. वा. रा. बा.का. 69. 1–8।

13. प्र. रा. पृ. 234–241 ।
14. वा. रा. बा. का. 74. 8–18, 75. 3–4 ।
15. प्र. रा. पृ 191 ।
16. वा. रा. बा. का. 72. 3–4 ।
17. प्र. रा. पृ. 291–92 ।
18. प्र. रा. पृ. 338–39 ।
19. वा. रा. सु.का. 28. 16,18,19 ।
20. प्र. रा. पृ. 340–42 ।
21. वा. रा. सु. का. 36.1–3 ।
22. प्र. रा. पृ. 337 ।
23. वा. रा. सु. का. 47. 31–36 ।
24. प्र. रा. पृ. 348 ।
25. वा. रा. सु. का. 38.10 ।
26. प्र. रा. पृ. 352–353 ।
27. वा. रा. सु. का. सर्ग 53,54,56 ।
28. प्र. रा. पृ. 355 ।
29. वा. रा. सु. का. 65. 1–15 ।